 ISSN 2581-9917

जटायु : निष्ठा और साहस का प्रतीक

प्रीतू दीक्षित*

भारतीय महाकाव्य वाल्मीकि रामायण में जटायु का चरित्र एक वीर, निष्ठावान और धर्मपारायण योद्धा के रूप में उभरता है। महर्षि वाल्मीकि ने अपने लेखन में जटायु की निडरता एवं तत्परता को उजागर किया है। रामायण महाकाव्य में श्रीराम, सीता, रावण तथा हनुमान जैसे मुख्य पात्रों के साथ-साथ कई अन्य चरित्रों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका देखने को मिलती है।

जटायु इस महाकाव्य का एक ऐसा ही पात्र है जो भले ही मुख्य पात्रों में नहीं आता परंतु उसकी भूमिका किसी भी दृष्टिकोण से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। जटायु ने श्री राम को रावण द्वारा सीता के हरण के बारे में जानकारी दी। इसके पश्चात् ही श्रीराम ने रावण को ढूंढने तथा सीता को सम्मानपूर्वक वापस लाने की योजना को स्वरूप प्रदान किया।

जटायु एक विशालकाय गिद्ध था, जिसे गरुड़वंश का सदस्य माना जाता है। गरुड़ का उल्लेख हिंदू धर्म के प्रमुख ग्रंथों में भगवान विष्णु के वाहन के रूप में किया गया है। जटायु के पिता का नाम अरुण था, जो सूर्य देव के रथचालक थे, और उनकी माता का नाम विनता था, जो गरुड़ की माँ थीं। गरुड़ पक्षी के परिवार से होने के कारण, जटायु का आकार बहुत विशाल और शक्तिशाली था। वे समुद्र के किनारे स्थित श्रृंगवेरपुर के राजा थे, और उनका व्यक्तित्व उच्च नैतिक और धार्मिक आदर्शों से प्रेरित था।

वह अपने भाई संपाति के साथ विख्यात थे और भगवान राम के पिता राजा दशरथ के मित्र थे। जटायु और संपाति को विख्यात ऋषि कश्यप के वंशज माना जाता है। उनकी कथा महाभारत और अन्य पौराणिक ग्रंथों में भी उल्लेखित है। बचपन में, जटायु और संपाति सूर्य के समीप उड़ने का प्रयास कर रहे थे, लेकिन संपाति ने जटायु को बचाने के लिए अपने पंख फैला दिए, जिससे उसका शरीर झुलस गया। यह प्रसंग उनकी पारिवारिक निष्ठा और साहस को दर्शाता है।

जटायु और रावण का युद्ध

जटायु का उल्लेख रामायण के अरण्यकांड में मिलता है जब रावण सीता का हरण कर आकाशमार्ग से लंका की ओर बढ़ रहा था। रावण, जो लंका का राजा था, एक दिन अपनी बहन शूर्पणखा के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए सीता का हरण करने आया। वह अपने रथ पर सीता को लेकर भाग रहा था। जब जटायु ने यह देखा तो उसने रावण से कहा कि वह सीता को छोड़ दे, क्योंकि वह श्रीराम की पत्नी हैं और इस अधर्म के कार्य से उसे बचना चाहिए।

रावण ने जटायु की बातों को नजरअंदाज किया, लेकिन जटायु ने अपनी निष्ठा के अनुसार रावण का मुकाबला करने का निर्णय लिया। वाल्मीकि रामायण (अरण्यकांड, सर्ग 51, श्लोक 2-12) में इस युद्ध का विस्तार से वर्णन किया गया है:

* सहायक प्रोफेसर (अतिथि)
एन.सी.डब्ल्यू.ई.बी, दिल्ली विश्वविद्यालय।

स तं दृष्ट्वा महावीर्य गृहीतायुधमग्रतः। अब्रवीत्परुषं वाक्यं क्रुद्धः शत्रुनिबर्हणः॥

(जटायु ने अत्यंत क्रोधित होकर रावण से कहा- 'हे दुष्ट! तुम माता सीता का हरण कर धर्म विरुद्ध कार्य कर रहे हो। मैं तुम्हें रोकूंगा!')

जटायु ने रावण के रथ को नष्ट कर दिया और उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया। किंतु अंततः रावण ने अपने खड्ग से जटायु के पंख काट दिए, जिससे वह भूमि पर गिर पड़े।

चित्रकारी : सिमरन त्यागी

चित्रकारी : सोनाली कुमारी

जटायु और रावण के बीच एक भीषण युद्ध हुआ। जटायु ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग कर रावण को रोकने का प्रयास किया।

गंभीर रूप से घायल जटायु जब श्रीराम और लक्ष्मण को मिले, तब उन्होंने अपने अंतिम क्षणों में सीता हरण की पूरी घटना सुना दी। अरण्यकांड (सर्ग 67, श्लोक 9-15) में जटायु के श्रीराम से संवाद का उल्लेख मिलता है:

रामं दृष्ट्वा तु वैदेहीं गृहीत्वा राक्षसेश्वरः। दक्षिणां दिशमुद्दिश्य ततो गत्वा निशाचरः॥

(जटायु ने श्रीराम को बताया कि रावण माता सीता को दक्षिण दिशा की ओर ले गया है।)

उनकी यह भेंट अत्यंत भावनात्मक थी, जहाँ भगवान राम ने उन्हें अत्यंत सम्मान दिया। राम ने जटायु के बलिदान को स्वीकार किया और उसकी वीरता को सम्मानित किया। श्रीराम ने सम्मानपूर्वक और श्रद्धा के साथ जटायु का अंतिम संस्कार किया। यह जटायु का बलिदान था, जो उन्हें महिमा और श्रद्धा का पात्र बनाता है। इस प्रसंग का उल्लेख अरण्यकांड (सर्ग 68, श्लोक 30-35) में किया गया है:

संदिष्टश्च यथान्यायं रामेण स महीपतिः। स्वर्गं गतो महातेजा जटायुः पतगेश्वरः॥

(श्रीराम द्वारा दिए गए विधिपूर्वक संस्कार के कारण जटायु स्वर्ग को प्राप्त हुए।)

ISSN 2581-9917

रितिका मदान
स्थान : जटायु अर्थ सेंटर, चदयामंगलम, केरल

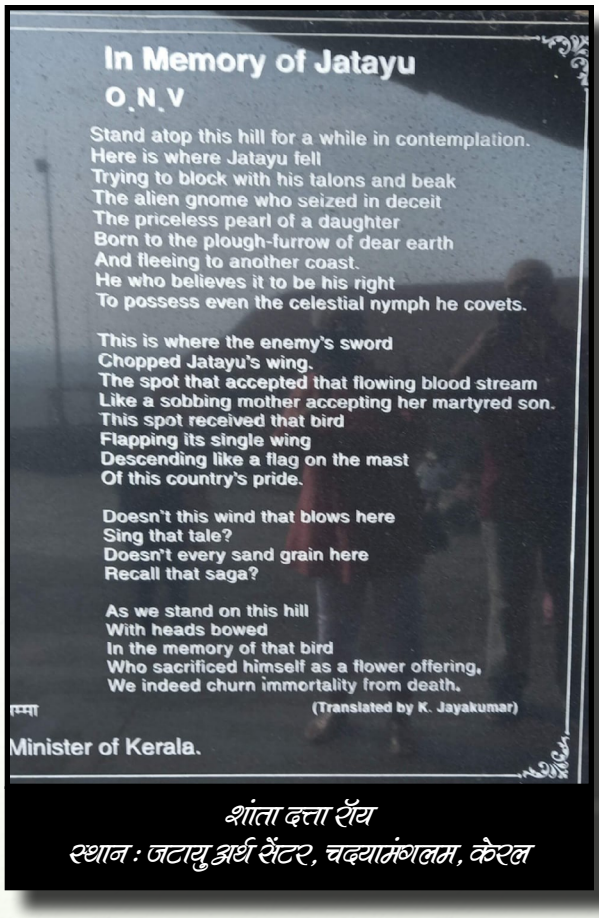

शांता दत्ता रॉय
स्थान : जटायु अर्थ सेंटर, चदयामंगलम, केरल

जब हनुमान जी माता सीता की खोज में लंका जाने वाले थे, तब उन्हें जटायु के भाई संपाति से सीता के स्थान की पुष्टि मिली। हालांकि, कुछ परंपराओं में यह भी वर्णन मिलता है कि हनुमान जी ने जटायु के अंतिम बलिदान के बारे में श्रीराम से सुना और उनकी वीरता की सराहना की। जटायु का त्याग और धर्म के प्रति समर्पण हनुमान जी के लिए भी प्रेरणा बना।

वाल्मीकि कृत रामायण एवं तुलसीदास कृत रामचरितमानस में जटायु के सन्दर्भ में समरूपता एवं भिन्नता

जटायु की कहानी का प्रसंग रामायण (वाल्मीकि कृत) और रामचरितमानस (तुलसीदास कृत) दोनों में मिलता है, लेकिन इन दोनों ग्रंथों में इसके विवरण में कुछ अंतर हैं। तुलसीदास रचित रामचरितमानस के भी अरण्य कांड में ही जटायु का प्रसंग मिलता है, पर इसमें कुछ भिन्नताएँ हैं। मूल रूप से देखें तो तुलसीदास जी ने इस प्रसंग को अधिक भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। बल्कि यह भी कह सकते हैं कि वाल्मीकि रामायण की तुलना में तुलसीदास ने जटायु को अधिक भक्तिभाव से चित्रित किया है। तुलसी के जटायु न केवल राम-भक्त हैं, बल्कि श्रीराम उन्हें अपने पिता के समान सम्मान देते हैं।

रामचरितमानस में भी वाल्मीकि रामायण की भांति जटायु रावण से युद्ध करते हैं और बुरी तरह घायल होकर गिर जाते हैं।

सुनु दसकंठ कह पंछी रीती। कबहुँ कि मरहिं अकाल बिनु नीति॥
(हे दशानन! सुन, पक्षियों की यह रीति नहीं होती कि वे बिना कारण अकाल मृत्यु मरें।)

फिर तुलसीदास जी आगे वर्णन करते हुए लिखते हैं:

राम काजु कीन्हें बिनु मोही। कहँ न लाव पुरुसत्वु तोही॥
(श्रीराम के कार्य किए बिना मैं मरूँ, यह कैसे हो सकता है? तुझे अपनी शक्ति दिखाने का अवसर देता हूँ।)

अति बयोबृध जहँ लगि मोराई। तिहुँ पद बधैं महा भट आई।
(मैं अत्यंत वृद्ध हूँ, मेरी शक्ति भी थोड़ी ही रह गई है, फिर भी तुझे तीन पग तक रोकने की हिम्मत रखता हूँ।)

वाल्मीकि रामायण में जटायु के घायल होकर गिरने का वर्णन है तो रामचरितमानस में रावण उनके पंख काट देता है:

उडि़ नभ तोरि बाहु बलु देखाई। गरुड़ समर दल सयन चलाई।
(जटायु ने आकाश में उड़कर अपने बाहुबल को दिखाया और गरुड़ की तरह रावण पर आक्रमण किया।)

रावन बाहु पंख कतरि कीन्हा। धरनि परेउ रुधिर बपु भीन्हा।।
(रावण ने अपनी तलवार से उनके पंख काट डाले, जिससे वे रक्तरंजित होकर धरती पर गिर पड़े।)

इसके बाद का वर्णन भी बहुत मार्मिक है। जब श्रीराम और लक्ष्मण वन में सीता को खोजते हुए आते हैं, तो वे जटायु को घायल अवस्था में पाते हैं:

देखि परम कृपालु रघुराई। गए तुरत जहँ पंख कटाई।
(परम कृपालु श्रीराम ने देखा कि जटायु घायल पड़े हैं और वे तुरंत उनके पास चले गए।)

रामु बिलोकि बयोबृध गीधा। बोला बचन नीति अरु सीधा।।
(श्रीराम को देखकर वृद्ध गिद्ध (जटायु) सीधे-सादे नीति युक्त वचन बोले।)

नाथ सीय हरि लीन्हि निशाचर। जाहु तात लघु बात असुराचार।।
(हे नाथ! निशाचर (रावण) माता सीता को हर ले गया है, आप शीघ्र जाइए, यह कोई बड़ी बात नहीं है।)

यानी, जटायु के अपने आत्मबलिदान का महत्त्व नहीं है, उनका ध्यान सीता हरण पर है और वो भगवान् राम से शीघ्र उनको मुक्त कराने का आग्रह करते हैं। यह अपने आप में आत्मबलिदान के सर्वश्रेष्ठ उदाहरणों में है।

जटायु का प्रतीकात्मक महत्त्व

जटायु केवल रामायण के एक पात्र नहीं हैं, बल्कि वह धर्म, कर्तव्य और साहस के प्रतीक भी हैं। यह दर्शाता है कि अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए जाति, वर्ग, या रूप कोई मायने नहीं रखता। जटायु ने अपने जीवन का बलिदान करके यह सिद्ध किया कि किसी भी धर्म और नैतिक कर्तव्य के लिए संघर्ष करना महत्त्वपूर्ण होता है, चाहे उसमें सफलता मिले या न मिले। जटायु का जीवन यह दर्शाता है कि धर्म की रक्षा में अपना सर्वस्व बलिदान कर देना सबसे बड़ा कार्य है।

जटायु की कहानी हमें यह सिखाती है कि कोई भी प्राणी, चाहे वह कितना भी छोटा या बड़ा हो, अगर वह सत्य, धर्म और निष्ठा के रास्ते पर चलता है, तो वह महानता की ओर अग्रसर होता है। उनकी कहानी यह भी दर्शाती है कि निस्वार्थ सेवा और कर्तव्यनिष्ठा किसी भी रूप में हो सकती है, चाहे वह मानव हो या कोई पक्षी।

जटायु का सांस्कृतिक महत्त्व

भारतीय संस्कृति में जटायु का महत्त्व केवल एक वीर योद्धा तक सीमित नहीं है, बल्कि वे एक आदर्श के रूप में देखे जाते हैं। उनका साहस, वीरता, और बलिदान न केवल रामायण में, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति में भी एक अमूल्य धरोहर के रूप में देखा जाता है। देश के कई हिस्सों में उनके नाम पर स्थान, मंदिर और पर्वत स्थित हैं। उदाहरण के लिए, केरल में स्थित जटायु अर्थ सेंटर एक प्रमुख स्थल है, जिसे उनकी स्मृति में निर्मित किया गया है। यह स्थान जटायु की वीरता और उनके बलिदान की गाथा को पुनर्जीवित करता है।

ISSN 2581-9917

एलिजाबेथ माइकल
स्थान : जटायु अर्थ सेंटर, चदयामंगलम, केरल

रितिका मदान
स्थान : जटायु अर्थ सेंटर, चदयामंगलम, केरल

अर्चित बागला
स्थान : आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी गाँव के निकट स्थित जटायु थीम पार्क में बड़ी चट्टान पर जटायु की विशाल मूर्ति

आधुनिक संदर्भ में जटायु की प्रेरणा

आज के समाज में भी जटायु की कहानी हमें यह सिखाती है कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। उनकी कहानी सामाजिक न्याय, वीरता और बलिदान के महत्त्व को रेखांकित करती है। जटायु का जीवन और संघर्ष यह सिद्ध करते हैं कि हम किसी भी परिस्थिति में अपने धर्म और कर्तव्यों को न भूलें, और हमेशा सत्य और न्याय के पक्ष में खड़े रहें। उनका बलिदान आज भी हमें प्रेरित करता है और यह साबित करता है कि अगर कोई कार्य धर्म के लिए किया जाए, तो वह कभी व्यर्थ नहीं जाता।

◈◈◈

 ISSN 2581-9917

सर्वतीर्थ ताकेद : जटायु उद्धार स्थल

नासिक, महाराष्ट्र से 58 किलोमीटर दूर ताकेद गाँव में एक भव्य मंदिर परिसर

उमा मोहन*

मंदिर परिसर में सबसे पहले माँ दुर्गा जी का मंदिर है। इसके बाद महंत श्री राम लखन जी की समाधि है, जिसमें उनकी मूर्ति स्थापित है। इसके आगे शिव जी का मंदिर है, जिसमें नंदी जी और शिव लिंग स्थापित हैं। आगे एक खुला सती माता का मंदिर है। इसमें मान्यता है कि जो भी व्यक्ति जलने से पीड़ित होता है वह यहाँ पर विधिविधान द्वारा की गई पूजा पाठ के उपरांत स्वस्थ हो जाता है। इसके बाद आता है राम जी का मंदिर जो कि इस परिसर का मुख्य मंदिर है। इसमें सर्वप्रथम गणेश जी के दर्शन होते हैं जिसके बाद गर्भ गृह में राम दरबार स्थापित है। यहाँ एक रिवर्स शिव लिंग है जिसमें हाथ डाल कर अंदर से एक और शिव लिंग निकाला जा सकता है। मान्यता है कि केवल भाग्यशाली लोग ही इसे निकल पाते हैं। परिसर में स्थित प्रयागराज कुंड की मान्यता है कि देवलोक से देव यहाँ स्नान करने आया करते थे। धरती के अंदर से प्रकट हुई राधा कृष्ण, गणपति जी, भैरव, शंकर पार्वती जी की मूर्तियाँ व प्राचीन विष्णु जी की प्रतिमा लेटी अवस्था में देखने को मिलती हैं। एक जल कुंड पशु पक्षियों के लिए बना है, जहां आम जनता का अंदर जाना वर्जित है। इसके अतिरिक्त यहाँ एक अतिशय कुंड है जिसकी मान्यता है कि इसमें स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है।

महंत श्री राम लखन जी की समाधि

विष्णु जी की प्रतिमा लेटी अवस्था में

गर्भ गृह में राम दरबार

* सी.ए. मुम्बई

ISSN 2581-9917

रिवर्स शिवलिंग

प्रयागराज कुंड

राधा कृष्ण, गणपति जी, भैरव, शंकर पार्वती जी

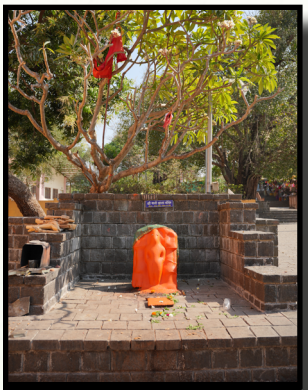
सती माता का मंदिर

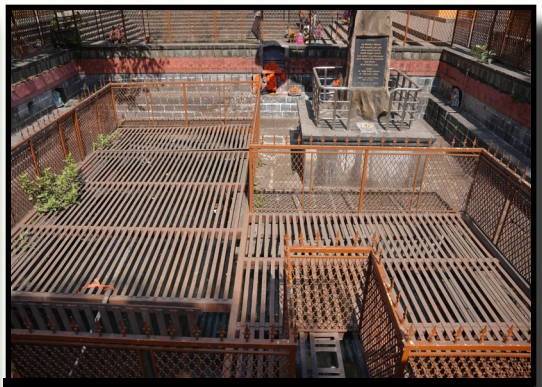
जल कुंड पशु-पक्षियों के लिए

अतिशय कुंड

इस परिसर का मुख्य आकर्षण जटायु जी का मंदिर है।

जब सीता माता को ढूँढते हुए राम जी इस स्थान पर पहुँचते हैं तो यहाँ पर उनका जटायु से घायल अवस्था में साक्षात्कार होता है। राम जी तीर चला कर धरती से जल निकलते हैं और जटायु जी को पिलाते हैं।

यह स्तंभ उस स्थान पर है जहां रावण का सामना करते-करते जटायु जी के पंख कट जाने पर वे धरती पर गिरते हैं। सीता जी के रावण द्वारा अपहरण के विषय में जटायु जी पूरा विवरण राम जी को यही पर सुनाते हैं।

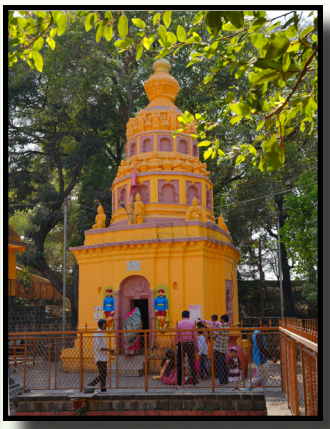

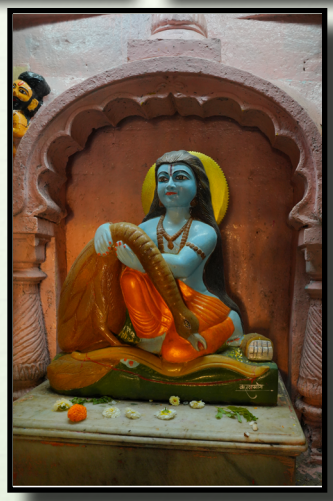

जटायु जी के मंदिर के अंदर की प्रतिमा। इसमें राम जी जटायु जिनके सिर को अपनी गोद में रख कर बैठे हैं।